P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-6* ISSUE-4* July- 2021
E: ISSN NO.: 2455-0817 *Remarking An Analisation*

शिक्षित तथा अशिक्षित माताओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन

A Comparative Study of the Adjustment of Adolescent Girls of Educated and Uneducated Mothers

Paper Submission: 04/07/2021, Date of Acceptance: 15/07/2021, Date of Publication: 24/07/2021

सुरेखा कुमारी
रिसर्च स्कॉलर,
गृह विज्ञान विभाग,
एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

ज्योति तिवारी
एसोसिएट प्रोफेसर,
गृह विज्ञान विभाग,
एच.एन.बी. गढ़वाल विश्वविद्यालय,
श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखंड, भारत

सारांश

शिक्षा के अभाव में मानवीय विकास की कल्पना करना अतिशयोक्ति मात्र है। बालक व बालिकाओं का बचपन अपने माता–पिता, अभिभावकों, शिक्षकों के द्वारा किये गये कुशल व्यवहार से ही प्रेरित होता है। प्रथम शिक्षक के रूप में माताएं ही बालकों को सही–गलत जानने में मदद करती है और बालक को जिम्मेदार नागरिक बनाती है। जिस प्रकार शरीर को भोजन की आवश्यकता होती है, उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा आवश्यक है और यदि माता शिक्षित न हो तो बालकों का कल्याण कभी नहीं हो सकता। बालक अपने माता–पिता, वातावरण, परिवार समाज का अनुकरण करके ही विकास की ओर अग्रसर होता है व विकास के इस क्रम में माता का स्थान सर्वप्रथम आता है। बालक बचपन से ही सबसे अधिक अपनी माता के सम्पर्क में रहता है एवं माता को ही बालक के भावी व्यक्तित्व की निर्माता के रूप में देखा जाता रहा है, आमतौर पर माता–पिता के सम्बन्ध, पारिवारिक वातावरण, मूलभूत सुविधाओं का अभाव स्वास्थ्य व समाज बालक व बालिकाओं के समायोजन को प्रभावित करते हैं। जीवन में विपरीत परिस्थितियों के कारण बालिकाओं को समायोजन संबंधी समस्याओं से अधिक जूझना पड़ता हैं। अतः शोधकार्य में यह जानने का प्रयास किया गया है कि ''शिक्षित माता की बालिकाओं व अशिक्षित माता की बालिकाओं में किस प्रकार का समायोजन अन्तर होता है। प्रस्तुत शोध बालिकाओं के समायोजन का अध्ययन करने पर केन्द्रित हैं। शोध कार्य में शिक्षित तथा अशिक्षित माताओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। अध्ययन मनोवैज्ञानिक उपकरण (आर0 के0 ओझा0 द्वारा निर्मित समायोजन सूची–2013) के माध्यम से किया गया है। परीक्षण में चार आयामों (Dimension) पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य, सामाजिक, संवेगात्मक के माध्यम से बालिकाओं के सम्पूर्ण समायोजन का आकलन किया गया। अध्ययन के परिणामों से निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, किन्तु बालिकाओं को परीक्षण से प्राप्त प्राप्तांकों के आधार पर समायोजन श्रेणी में रखने से ज्ञात होता है कि अशिक्षित बालिकाओं का पारिवारिक समायोजन, समाजिक व संवेगात्मक क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं की बालिकाओं से समायोजन कुछ अच्छे स्तर पर पाया व स्वास्थ्य क्षेत्र में शिक्षित महिलाओं की बालिकाओं को उच्च स्तर का पाया गया, इसलिए अभिभावक व माता–पिता को अपनी बालिकाओं की समायोजन सम्बन्धी समस्याओं पर अधिक ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, जिससे वह अपने जीवन में आने वाली समस्याओं का सामना करने में सक्षम हो सकें।

It is only an exaggeration to imagine human development in the absence of education. The childhood of boys and girls is inspired by the efficient behavior done by their parents, guardians, teachers. As the first teacher, it is the mother who helps the children to know right and wrong and makes the child a responsible citizen. Just as the body needs food, in the same way education is necessary for mental development and if the mother is not educated then the welfare of the children can never happen. The child moves towards development only by imitating his parents, environment, family, society and in this sequence of development, the place of mother comes first. Due to adverse circumstances in life, girls have to deal more with adjustment related problems. Therefore, in the research work, an attempt has been made to know that what kind of adjustment difference is there between the girls of educated mother and the girls of uneducated mother. The present research is focused on studying the adjustment of girls. In the research work, a comparative study of the adjustment of adolescent girls of educated and uneducated mothers has been done. The study has been done through psychological tools (Adjustment List-2013 prepared by RK Ojha). In the test, the overall adjustment of the girl child was assessed through four dimensions (QUMDV) family adjustment, health, social, emotional. The results of the study have concluded that there is no significant difference in the adjustment of girls of educated and uneducated women, but keeping the girls in the adjustment category on the basis of the scores obtained from the test is known. That the family adjustment of uneducated girls, adjustment of educated women in social and emotional field with girls was found to be at some good level and girls of educated women in the health sector were found to be of high level, so parents and parents should be concerned about the adjustment of their girls. There is a need to focus more on the problems, so that he can be able to face the problems that come in his life.

मुख्य शब्द : समायोजन, शिक्षित व अशिक्षित महिलाएं, किशोर बालिकाएं।
Adjustment, Educated and Uneducated Women, Adolescent Girls.

प्रस्तावना

गर्भकाल से ही बालक में विकास प्रक्रिया आरम्भ हो जाती है, जिसके परिणामस्वरूप समायोजन भी प्रारम्भ हो जाता है। यह प्रक्रिया केवल मानव में ही नहीं बल्कि पशु–पक्षी और वनस्पतियों में भी होती है, इसी प्रक्रिया के फलस्वरूप जो अपने को परिस्थिति व वातावरण के अनुकूल बना लेते है, समायोजित हो जाते है और जो परिस्थिति व वातावरण के अनुकूल नहीं बन पाते, निरन्तर कठिनाईयों में उलझे रहते है। एक तरफा प्रतिस्पर्धा का युग है, वही प्रत्येक व्यक्ति की कुछ न कुछ समस्याएँ और परेशानियाँ होती है किन्तु किसी भी व्यक्ति की व्यक्तिगत प्रभावशीलता (Personal Effectiveness) इस बात पर निर्भर नही रहती कि वह कितनी समस्याओं का सामना करता है, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि वह किस प्रकार से प्रतिक्रिया करता है या इनमें वह किस प्रकार से समायोजन (Adjustment) करता हैं। समायोजन शब्द '1930' के दशक में मनोविज्ञान (Psychology) में उपयोग में आया, और लॉरेस शेफर (Laurance shaffer,1961) की शास्त्रीय पुस्तक ''द साइकोलॉजी ऑफ एडजस्टमेंट'' के द्वारा समर्थन प्राप्त हुआ, ''शेफर'' ने समायोजन को एक ऐसी प्रक्रिया के रूप में स्वीकार किया है ''जिसे कोई भी व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए अपनाते है और विषम परिस्थितियों के साथ तालमेल बैठाने की कोशिश करते है, अर्थात् समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक जीवित जीव अपनी आवश्यकताओं और परिस्थितियों के बीच संतुलन बनाए रखता है।

जेम्स ड्रेवर (James Drever,1968) ने ''डिक्शनरी ऑफ साइकोलॉजी'' में समायोजन को विशेष परिस्थितियों की क्षतिपूर्ति के लिए मिलने वाले परिणामों की श्रंखला व संशोधनों के रुप में परिभाषित किया हैं। जिसमें समायोजन को अनुकूलन की एक प्रक्रिया कहां है, जिसके माध्यम से व्यक्ति विभिन्न 'मांगो' (Demands) या 'दबावो' (Pressure) का प्रबंधन (Manages) या सामना करता हैं। समायोजन, एक व्यक्ति और पर्यावरण के बीच तालमेल है जो व्यक्ति विशेष को किसी भी स्थिति में समायोजित करने की क्षमता को दर्शाता है। वास्तव में जब से जीवन का आरम्भ होता है तभी से व्यक्ति का जैविक, भौतिक, सामाजिक, संवेगात्मक सभी प्रकार का वातावरण बदलता रहता है। इन बदलती हुई परिस्थितियों के कारण उसके सामने नई–नई समस्यायें एवं स्थितियाँ उत्पन्न होती रहती हैं जिसमें व्यक्ति को समायोजन करना होता है।

आइसेंक एवं अन्य (1972) ने समायोजन को परिभाषित करते हुए कहा है कि– ''समायोजन वह अवस्था है जिसमें व्यक्ति की आवश्यकताएँ तथा वातावरण के दावे (Claim) पूर्णरूप से सन्तुष्ट होते है अथवा समायोजन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा आवश्यकताओं और दावों में सामंजस्य सम्बन्ध (Harmonious Relationship) प्राप्त होता है। अतः यह कहा जा सकता है कि समायोजन के द्वारा व्यक्ति की आवश्यकता और वातावरण के बीच जो माँग या दावें (Claim) है उनमें सामंजस्य सम्बन्ध प्राप्त होता है। व्यवहारिक रूप में आवश्यकताओं और वातावरण के बीच अपनी सन्तुलित क्रियाओं के द्वारा अपने उद्देश्य की पूर्ति कर लेना ही समायोजन की संज्ञा माना जाता है।

मास्लो तथा मिटिलमैन (1954) ने समायोजन को परिभाषित किया है जिसमें ''व्यक्ति के समायोजन से उसकी उस विशिष्ट कार्यपद्धति का बोध होता है जिसके द्वारा वह अपने जीवन की समस्याओं को सुलझाने तथा उनके साथ तालमेल बैठाने का प्रयास करता है।''

गैट्स व अन्य (1950) समायोजन एक लगातार चलने वाली प्रक्रिया है जिसके अनुसार एक व्यक्ति अपने वातावरण के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपना व्यवहार परिवर्तित करते रहता है। अतः यह कहा जा सकता है कि ''समायोजन एक सतत रूप से चलने वाली प्रक्रिया है, जो व्यक्ति एवं उसके वातावरण के बीच चलती है।

स्मिथ (1956) ''अच्छा समायोजन वह है जो यथार्थ पर आधारित तथा संतोष देने वाला होता है। वह कुंठाओ, तनावों एवं दुश्चिन्ताओं को जहाँ तक सम्भव हो, कम करता है।'' स्मिथ के मतानुसार अच्छा समायोजन वही है जिसका व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन से सम्बन्ध हो, यदि किसी आवश्यकता की संतुष्टि के आधार पर समायोजन होता है तो वह अच्छा समायोजन नहीं माना जाएगा।

व्यक्ति को जीवन में निम्नलिखित क्षेत्रों में समायोजन की आवश्यकता होती है।

पारिवारिक या गृह समायोजन (Family and Home Adjustmennt)

पारिवारिक या गृह समायोजन में बच्चों का माता–पिता से या माता–पिता का बच्चों से सम्बन्ध व व्यवहार, पति–पत्नी के साथ सम्बन्ध व व्यवहार, जीवन साथी व वैवाहिक जीवन में व्यवहार, प्रत्येक वह सम्बन्ध जिसमें हम जुड़े हुए हैं।

शैक्षिक समायोजन (Educational Adjustment)

शैक्षिक समायोजन में शैक्षणिक उपलब्धियों के अर्जन उनके बीच आने वाली बाधाओं, अवरोधों जिसमें मुख्यतः पठन–पाठन सामग्री, विद्यालय, शिक्षक, विषय, सहपाठियों व विद्यालयीय अनुशासन आते है।

स्वास्थ्य समायोजन (Health Adjustment)

व्यक्ति को अपनी उम्र की प्रत्येक अवस्था में शारीरिक व मानसिक बीमारियों का सामना करना पड़ता है, अतः यह मनुष्य के जीवन में समायोजन का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

संवेगात्मक समायोजन (Emotional Adjustment)

संवेगात्मक समायोजन से तात्पर्य ऐसे संवेगात्मक उद्दीपकों से है जिसमें व्यक्ति विभिन्न प्रकार के संवेगों, क्रोध, प्रेम, भय, डर, ईर्ष्या, जुगुप्सा आदि अपने संवेगों के साथ समायोजन करता है।

सामाजिक समायोजन (Social Adjustment)

व्यक्ति एक सामाजिक प्राणी है, जिसके लिए व्यक्ति को उसके समाज के साथ गतिशील रहना पड़ता हैं, जिससे उसे सामाजिक नियमों, मानकों परम्पराओं व प्रथाओं,

रीति–रिवाजों के अनुकूल व्यवहार करना होता है। सामाजिक समायोजन के अनेक माध्यम होते है, जिसमें सामाजिक कार्य, सामुदायिकता सहभागिता, सामूहिक गतिशीलता आदि क्षेत्र आते हैं।

धर्मिक समायोजन (Religious Adjustment)

वास्तविक धर्म वही है जिसमें दूसरे धर्म के मार्ग में अवरोध न हो। धार्मिक चेतना, पूजा–पाठ, कथा– प्रवचन, ईमानदारी, नैतिकता, सद्चरित्रता एवं धार्मिक सहिष्णुता से धार्मिक समायोजन में सहायता मिलती है। क्लार्क एवं बार्नर ने धार्मिक समायोजन के विषय में कहा है कि ''धार्मिक समायोजन से तात्पर्य धार्मिक विश्वास एवं धार्मिक चेतना में आस्था से है। धार्मिक क्रिया–कलापों में सक्रिय भाग लेने एवं धार्मिकता में प्रबल रूचि रखने एवं धर्म के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण से सामाजिक समायोजन का उच्चस्तरीय सहसम्बन्ध होता है।

मनोवैज्ञानिको नें समायोजन के निम्न प्रकारों का वर्णन किया है–

1. सृजनात्मक समायोजन
2. स्थानापन्न समायोजन
3. बैद्धिक समायोजन
4. सुरक्षा युक्ति समायोजन

सृजनात्मक समायोजन

निर्माणकारी कार्यों के द्वारा अपने प्रयत्नों में वृद्धि करके लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास करना सृजनात्मक समायोजन कहलाता है।

स्थानापन्न समायोजन

किसी लक्ष्य की प्राप्ति में पूर्ण प्रयत्न करने के बाद भी जब वह लक्ष्य प्राप्त न हो तो व्यक्ति अपने लक्ष्य को परावर्तित कर उस दूसरे लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने लगता है, जैसे– किसी विषय में बार–बार प्रयास करने पर भी असफलता मिलती है तो बालक अन्य विषय में प्रयास करता हैं। इसी को स्थानापन्न की संज्ञा दी जाती है।

बौद्धिक समायोजन

इस प्रकार के समायोजन में व्यक्ति लक्ष्य की प्राप्ति के लिए उच्चतर मानसिक प्रक्रियाओं का सहारा लेता है। जिसमें सोच–विचार एवं तर्क–वितर्क के आधार पर लक्ष्य प्राप्ति का प्रयास किया जाता है, इसमें गणितीय नियमों का प्रयोग आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायक होता है। इस प्रकार के समायोजन में आर्थिक, शैक्षिक एवं व्यवसायिक क्षेत्र आते है।

सुरक्षा युक्ति समायोजन

इस प्रकार के समायोजन में प्राणी अपनी अचतेन मानसिक प्रक्रियाओं या सुरक्षा युक्तियों का उपयोग करता है, जिसके आधार पर वह अपने तनाव एवं कुंठा की प्रबलता को कम करने का प्रयास करता है। फ्रायड ने भी अपने मनोवैज्ञानिक विश्लेषण सिद्धान्त में व्यक्तित्व की कई प्रकार की सुरक्षा युक्तियों का वर्णन किया है जो समायोजन में सहायक के रूप में लिया जाता है, जैसे– प्रतिगमन, उन्नयन, युक्तिकरण, प्रतिकरण, रूपान्तरण, विस्थापन, आरोपण, तदात्मीकरण एवं अन्तः निर्देश।

समायोजन के बाधक तत्व

व्यक्ति का समायोजन, कुसमायोजन में स्वतः परिवर्तित नहीं होता बल्कि वह कुछ बाधक तत्वों के परिणाम स्वरूप कुसमायोजन के रूप में घटित होता है, जिसमें निम्नलिखित तत्वों को उत्तरदायी माना जाता है।

प्रतिबल

प्रतिबल एक प्रकार की बहुआयामी प्रक्रिया है, जिसमें एक प्रकार की दबाव पूर्ण दशा होती है जो व्यक्ति को समायोजन के लिए बाध्य करती है।

दबाव

दबाव एक ऐसी शक्ति है जो प्राणी को अन्तश्य एवं वर्हिस्थ रूप से प्रभावित करती है। आधुनिक समय में व्यक्ति के ऊपर प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष अनेक प्रकार के दबावों का प्रभाव पड़ता है, जैसे– भौतिक, मनोवैज्ञानिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक।

दुश्चिन्ता

दुश्चिन्ता शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के Anxietas शब्द से हुई है। जिसका अर्थ Experience of varying blends of uncertainly agitation and threat है। मनोवैज्ञानिकों ने दुश्चिन्ता या चिन्ता को एक ऐसी भावात्मक एवं दुखद (affective and unpleasant) अवस्था कहा है जो अहम (ego) को आलम्बित खतरे (inpending danger) से सम्पर्क कराती है। जिससे व्यक्ति पर्यावरण के साथ अनुकूली ढ़ग से व्यवहार कर सके।

संघर्षया अन्तर्द्वन्द

मनोवैज्ञानिकों ने संघर्ष के विषय में स्पष्ट करते हुए कहा है कि ''व्यक्ति का जीवन ही संघर्षों की श्रृंखला से मिलकर बना है।'' यदि व्यक्ति के जीवन में संघर्ष न हो तो उसमें अहम् एवं पराअंह जैसी प्रवृत्तियों का विकास सम्भव नहीं है जिसके कारण व्यक्ति की वास्तविकता एवं नैतिक आदर्शो की चेतना का विकास अवरूद्ध व क्षीण हो जाता हैं।

भग्नाशा या कुण्ठा

व्यक्ति के समायोजन को प्रभावित करने में कुण्ठा की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भौतिक एवं मनोवैज्ञानिक पर्यावरण तथा प्राणी की जैविक आवश्यकताओं की सीमाओं से सम्बन्धित अनेक कारक कुण्ठा की उत्पत्ति को आधार प्रदान करते है। जिससे कुण्ठा की प्रबलता ओर बढ़ जाती है।

समायोजन के तरीके

सामान्यतः व्यक्ति प्रत्येक परिस्थिति में समायोजन करने का प्रयास करता है, कहीं वह सफल तो कहीं असफल हो सकता है। प्रतिबल परिस्थिति कितनी भी तीव्र क्यों न हो वह उसमें समायोजन के लिए संघर्ष अवश्य करता है। समायोजन के प्रयास दो प्रकार के हो सकते है।

1. प्रत्यक्ष प्रयास
2. मनोरचनाएं

प्रत्यक्ष प्रयास

प्रत्यक्ष प्रयास में समायोजन के वे तरीके आते है जो प्रत्यक्ष होते है और जिनमें व्यक्ति अशान्त करने वाली परिस्थिति को परिवर्तित करना चाहता है अथवा अशान्त करने वाली परिस्थिति को हटाना चाहता है या उस परिस्थिति से अपने आपको हटाना चाहताा है।

मनोरचनाएं

प्रतिबल, अन्तर्द्वन्द्व और कुण्ठा से बचने के प्रयास में इन मनोरचनाओं का उपयोग किया जाता है। प्रत्येक व्यक्ति में कुछ न कुछ भय होता है कि उसके परिचित उसका तिरस्कार न करें, इस प्रकार के भय, विपत्ति की परिस्थितियों में अधिक बढ़ जाते हैं। इस प्रकार की भय उत्पन्न करने वाली परिस्थितियों में व्यक्ति सरलता से नहीं झुकता है। इन परिस्थितियों में भी व्यक्ति मनोरचनाओं का उपयोग करता है।

मानसिक स्वास्थ्य व समायोजन ये दोनो समस्या तब ओर जटिल हो जाती है, जब यह किशोर बालिकाओं के खराब स्वास्थ्य का कारण बन जाए। माता–पिता में मधुर सम्बन्ध न होना अशिक्षित होना, आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बालक कहीं न कहीं अपने अन्दर आत्मविश्वास उत्पन्न नहीं कर पाता हैं, जिससे बालकों की समायोजनशीलता प्रभावित होती है। आधुनिक समाज में बच्चों से जो अपेक्षाएं की जाती है, वे बिल्कुल भी स्पष्ट नहीं होती, बालक के विकास के साथ–साथ कुछ दैहिक एवं मनोवैज्ञानिक आवश्यकताएं भी होती है, जो बालक को सक्रियता प्रदान करती है, चूँकि आवश्यकताओं का स्वरूप भिन्न–भिन्न होता है, जिससे बालक/बालिकाओं के व्यवहार में भी भिन्नता होती है, अपने व्यवहार के माध्यम से ही वह अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने का प्रयास करता है। लक्ष्य की प्राप्ति बालक में सफलता के भाव उत्पन्न करती है, किन्तु लक्ष्य प्राप्ति की विफलता बालकों में कुठां, अन्तर्द्वन्द्व एवं चिन्ता की उत्पत्ति करता है जिससे यह परिस्थिति प्रथम समायोजन की मात्रा में वृद्धि उत्पन्न करती है, दूसरे परिस्थिति समायोजन में अवरोध उत्पन्न होता है। परिणाम स्वरूप बालक सुरक्षात्मक युक्तियों के प्रयोग से स्वयं को आन्तरिक एवं वाह्य दबावों से उत्पन्न प्रतिबलों (Stress) चिन्ता (anxiety), मानसिक संघर्ष (Mental Conflict) एवं कुण्ठा या भग्नाशा (Frustration) से मुक्त होने का प्रयास करता है। प्रत्येक सुरक्षा युक्ति के अनुप्रयोग से मनोवैज्ञानिक अथवा मानसिक ऊर्जा (Psychological or Mental Energy) खर्च होती है। इस प्रकार की सुरक्षात्मक युक्तियों का प्रयोग स्वस्थ बालक के द्वारा ही किया जा सकता है, अतः माताओं को अपनी बालिकाओं के प्रति अधिक सजग व सक्रिय होने की आवश्यकता है जिससे बालिकाएं जीवन की प्रत्येक समस्याओं का सामना कुशलतापूर्वक कर सकें।

अध्ययन का उद्देश्य

1- शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।

परिकल्पना

शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

साहित्यावलोकन

माली, राजकुमार (2002) ने सम्पन्न एवं विपन्न वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता, आत्म सम्प्रत्यय एवं विद्यालयी निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसमें चूरू जिले के 200 ग्यारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया। सम्पन्न एवं विपन्नवर्ग के विद्यार्थियों का गृह समायोजन क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया जिसमें पाया गया कि सम्पन्न एवं विपन्नवर्ग के किशोर विद्यार्थियों की गृह समायोजन क्षमताएं समान है, उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। सम्पन्न एवं विपन्न वर्ग के विद्यार्थियों का स्वास्थ्य समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया तो उसमे पाया गया कि सम्पन्न एवं विपन्नवर्ग के किशोर विद्यार्थियों की स्वास्थ्य समायोजन क्षमताएं समान है उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं है। सम्पन्न एवं विपन्नवर्ग के विद्यार्थियों की सम्पूर्ण समायोजन क्षमता में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं है। दोनों वर्गों के सभी प्रकार के समायोजन समान है।

गारिया (2012) ने अपनें शोध कार्य में छात्रों के समायोजन स्तर पर उनके माता पिता के व्यवहार के प्रभाव को जानने का प्रयास किया। शोध का मुख्य उददेश्य माता पिता तथा बालकों के मध्य सम्बन्ध, व माता पिता द्वारा छात्रों को प्रदान की जाने वाली समायोजन सम्बन्धी जानकारी को जानना तथा उसका प्रभाव छात्रों के समायोजन स्तर पर ज्ञात करना था। शोधकार्य हेतु न्यादर्श के रूप में राजकीय विद्यालय, टिहरी गढवाल, उत्तराखण्ड के कक्षा आठ के 143 छात्रों को चयनित किया गया। प्रदत्तों के संकलन हेतु सिंह (1981) द्वारा निर्मित पेरेण्ट चाइल्ड रिलेशनशिप क्वैशचेनियर तथा मित्तल द्वारा निर्मित एडजस्टमेंट इन्वेटरी का प्रयोग किया गया। शोध निष्कर्षो के अनुसार उच्च एवं निम्न समायोजित छात्र अपने माता पिता से प्रेम पूर्ण व्यवहार अधिक तथा प्रभुत्वपूर्ण व्यवहार कम अनुभव करते हैं। माता पिता का प्यार, सुरक्षा, दण्ड एवं अनुशासन सम्बन्धी व्यवहार छात्रों के समायोजन स्तर को सार्थक रूप से प्रभावित करता है।

गनी, एम.वाई. और मीर, एम. ए. (2013) ने ''कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेण्ट्स'' नामक शोध किया और पाया कि सरकारी की अपेक्षा निजी महाविद्यालयों के विद्यार्थियों के सामाजिक समायोजन का स्तर उच्च है, सरकारी और निजीमहाविद्यालयों के विद्यार्थियों के शैक्षिक समायोजन में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, सरकारी और निजीमहाविद्यालयों के विद्यार्थियों के संवेगात्मक समायोजन में अन्तर नहीं है, महाविद्यालयी छात्र एव छात्राओं के सामाजिक समायोजन में अन्तर नहीं है, महाविद्यालयी छात्र एवं छात्राओं के शैक्षिक समायोजन में अन्तर नहीं है।

शाम्भवी (2019) के द्वारा कामकाजी एवं घरेलु महिलाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया, जिसमे आंकड़ों के संग्रह हेतु बेल एडजस्टमेंट इन्वेंट्री का प्रयोग किया गया। आंकड़ों का संग्रह 30 कामकाजी तथा 30 घरेलु महिलाओं के माध्यम से किया गया जिसमे उनकी आयु, शिक्षा एवं उनकी आय के आधार पर न्यादर्श का चयन किया गया। शोधार्थी द्वारा आंकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात होता है की घरेलु महिलाओं का पारिवारिक समायोजन कामकाजी महिलाओं की अपेक्षा अधिक समायोजित है तथा कामकाजी महिलाओं का

समायोजन स्वास्थ्य, भावनात्मक एवं सामाजिक समायोजन के सन्दर्भ में घरेलु महिलाओं से अधिक समायोजित है।

कॉन्स, इ0 एवं अन्य (2020) के द्वारा प्रस्तुत शोध ''साइबर पीड़ित किशोरों पर अकेलापन, पारिवारिक संवाद एवं स्कूल समायोजन को देखा गया। निष्कर्ष में पाया गया कि व्यक्तिगत, पारिवारिक और सामाजिक चर के सन्दर्भ में साइबर पीड़ित बालिकाएं प्रभावित होती है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन के लिए सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया हैं।

न्यादर्श

प्रस्तुत अध्ययन में जनपद बिजनौर से चयनित ग्यारह उपखण्ड़ों से छः उपखण्ड़ों (नहटौर, नूरपुर, कोतवाली, आल्हेपुर, स्योहारा, बुढ़ानपुर, अफजलगढ़) के सरकारी बालिका विद्यालय (हाईस्कूल एवं इण्टरमीडिएट) से प्रतिदर्श का चुनाव किया गया। शोध कार्य हेतु कुल 400 बालिकाओं का चयन किया गया जिसमें 200 शिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएँ व 200 अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएँ, शोध कार्य बहुस्तरीय यादृच्छिक प्रतिदर्श के आधार पर लागू किया गया हैं।

प्रयुक्त उपकरण

प्रस्तुत शोध अध्ययन में निम्न मनोवैज्ञानिक उपकरणों का प्रयोग किया गया है–

समायोजन परीक्षण

समायोजन को ज्ञात करने के लिए आर0 के0 ओझा द्वारा निर्मित एवं प्रमाणीकृत परीक्षण समायोजन सूची (2013) का प्रयोग किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी

प्रस्तुत शोध अध्ययन में मध्यमान, मानक विचलन तथा टी परीक्षण का प्रयोग किया गया हैं।

प्रदत्तों का विश्लेषण

तालिका : 1

शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन की तुलना

समायोजन के क्षेत्र	शिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएं (200)		अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएं (200)		कुल प्रतिदर्श (400)	टी मूल्य	सार्थकता स्तर
	सामान्तर माध्य	मानक विचलन	सामान्तर माध्य	मानक विचलन			
पारिवारिक समायोजन	10.66	4.216	10.60	4.041	400	.157	असार्थक
स्वास्थ्य	9.65	5.113	10.46	4.821	400	1.620	असार्थक
सामाजिक	14.34	4.747	14.23	4.985	400	.226	असार्थक
संवेगात्मक	13.59	6.060	13.36	6.236	400	.382	असार्थक
सम्पूर्ण समायोजन	48.24	15.426	48.64	15.258	400	.257	असार्थक
*सार्थकता मूल्य: $P < 0.05$, N.S. (असार्थक): $P > 0.05$ **t-value** = (1.97), for df =398							

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन में अन्तर की तुलना चार आयामों (dimension)–पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य, सामाजिक और संवेगात्मक क्षेत्र में की गई तथा यह पाया गया कि समायोजन के चारों क्षेत्रों में शिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं व अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के मध्य 't' का मान सार्थकता के 0.05 स्तर पर सार्थक नहीं है, सम्पूर्ण (Overall) समायोजन की तुलना करने पर भी दोनों समूहों में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। अतः समायोजन में प्रस्तावित शून्य परिकल्पना सत्य सिद्ध होती है और यह ज्ञात होता है कि शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन में कोई अन्तर नहीं है

समायोजन स्तर की तुलना–समायोजन के विभिन्न आयामों में, समायोजन स्तर पर बालिकाओं के प्रतिशत का वितरण

तालिका : 2

(कुल उत्तरदाता–400)

समायोजन आयाम	शिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएं (200)		अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाएं (200)	
	न0	प्रतिशत %	न0	प्रतिशत %
1) पारिवारिक समायोजन (HOME)				

उत्तम	06	3%	11	5.5%
अच्छा	43	21.%	36	18%
औसत	103	51.5%	116	5%
असंतोषजनक	29	14.5%	20	10%
निम्नतम	19	9.5%	17	8.5%
2)स्वास्थ्य (HEALTH)				
उत्तम	09	4.5%	03	1.5%
अच्छा	16	8%	07	3.5%
औसत	79	39.5%	87	43.5%
असंतोषजनक	21	10.5%	27	13.5%
निम्नतम	75	37.7%	76	38%
3)सामाजिक (SOCIAL)				
उत्तम	10	5%	11	5.5%
अच्छा	13	6.5%	16	8%
औसत	107	53.5%	108	54%
असंतोषजनक	43	21.5%	44	22%
निम्नतम	27	13.5%	21	10.5%
4) संवेगात्मक (EMOTIONAL)				
उत्तम	04	2%	06	3%
अच्छा	07	3.5%	08	4%
औसत	74	37%	72	36%
असंतोषजनक	37	18.5%	30	15%
निम्नतम	78	39%	84	42%

उपरोक्त तालिका में शिक्षित तथा अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं का समायोजन स्तर विभिन्न क्षेत्रों (पारिवारिक, स्वास्थ्य, सामाजिक व संवेगात्मक) में दर्शाया गया है। शिक्षित महिलाओं की 200 किशोर बालिकाओं में से पारिवारिक (HOME) क्षेत्र में 3% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 21.5% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 51.%बालिकाओं का समायोजन औसत, 14.5% बालिकाओं का अंसतोषजनक व 9.5% बालिकाओं का समायोजन स्तर निम्नतम था।

स्वास्थ्य (HEALTH) के क्षेत्र में 4.5% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 8% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 39.5% बालिकाओं का समायोजन औसत, 10.5%बालिकाओं का असंतोषजनक व 37.7% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम पाया गया।

सामाजिक (SOCIAL) क्षेत्र में 5% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 6.5% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 53.5% बालिकाओं का समायोजन औसत, 21.5% बालिकाओं का असंतोषजनक व 13.5% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम पाया गया।

संवेगात्मक (EMOTIONAL) क्षेत्र में 2% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 3.5% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 37% बालिकाओं का समायोजन औसत, 18.5% बालिकाओं का असंतोषजनक व 39% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम पाया गया।

अशिक्षित महिलाओं की 200 बालिकाओं के सन्दर्भ में उपरोक्त तालिका की प्रविष्टियाँ दर्शाती है कि समायोजन के परिवारिक (HOME) क्षेत्र में 5.5%

बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 18% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 58.9% बालिकाओं का समायोजन औसत 10% बालिकाओं का असंतोषजनक व 8.5% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम था।

स्वास्थ्य (HEALTH) क्षेत्र में 1.5% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 3.5% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 43.5% बालिकाओं का समायोजन औसत, 13.5% बालिकाओं का असंतोषजनक व 38% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम पाया गया।

सामाजिक (SOCIAL) क्षेत्र में 5.5% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 8% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 54% बालिकाएं औसत, 22% बालिकाएं असंतोषजनक व 10.5% बालिकाओं का समायोजन स्तर निम्नतम पाया गया।

संवेगात्मक (EMOTIONAL) क्षेत्र में 3% बालिकाओं का समायोजन उत्तम, 4% बालिकाओं का समायोजन अच्छा, 36% बालिकाओं का समायोजन औसत, 15% बालिकाओं का असंतोषजनक व 42% बालिकाओं का समायोजन निम्नतम पाया गया।

निष्कर्ष

शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं के समायोजन की तुलना से ज्ञात हुआ कि समायोजन के चारों क्षेत्रों में (dimension) (पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य, सामाजिक और संवेगात्मक) सार्थकता 0.005 स्तर पर सार्थक नहीं है, सम्पूर्ण समायोजन की तुलना में भी कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया ($P>0.05$) अतः शून्य परिकल्पना– शिक्षित व अशिक्षित महिलाओं की किशोर बालिकाओं के समायोजन में सार्थक अन्तर नही है, स्वीकार की गई। बालिकाओं का समायोजन स्तर परीक्षण के सभी आयाम (Dimansion) के आधार पर भी देखा गया, जिसमें समायोजन को पारिवारिक समायोजन, स्वास्थ्य, सामाजिक व संवेगात्मक क्षेत्र में बालिकाओं का आकलन करने के उपरान्त प्राप्त परिणामों के आधार पर पाया गया कि पारिवारिक समायोजन में अशिक्षित महिलाओं की बालिकाओं का समायोजन शिक्षित महिलाओं की बालिकाओं से अच्छा था। अतः परिणाम इस बात की पुष्टि करते है कि शिक्षित व अशिक्षित महिलाएं लगभग एक समान ही अपनी किशोर बालिकाओं की देखभाल करती है। शिक्षित माता होने से वह अपनी बालिकाओं के स्वास्थ्य के प्रति जागरूक तो होती है किन्तु समय का आभाव होता है। वहीं अशिक्षित माता के पास समय है मगर ज्ञान के आभाव में बालिकाओं का स्वास्थ्य खराब होने की सम्भावना अधिक होती है। अशिक्षित माताओं की बालिकाओं को पारिवारिक, सामाजिक, संवेगात्मक रूप से शिक्षित माताओं की बालिकाओं से अच्छा पाया गया, इसलिए शिक्षित व अशिक्षित माताएं कुछ समय अपनी बालिकाओं के लिए निकाले जिससे समायोजन के उच्च प्रतिमान स्थापित किये जा सकें, जिसमें अशिक्षित माताओं को बालिकाओं के स्वास्थ्य के प्रति सजग होने की आवश्यकता व शिक्षित माताओं को चाहिए कि बालिकाएं सामाजिक, संवेगात्मक व परिवार के उत्तरदायित्वों के प्रति उदासीन न हो। माता–पिता, परिवार के सदस्य, शिक्षक व समाज के व्यक्ति, किशोर बालिकाओं का थोड़ा ध्यान रख उनके समक्ष एक अच्छा आदर्श प्रस्तुत करें, जिसके परिणामस्वरुप किशोर बालिकाओं को अपनी समस्या समाधान के लिए दिशा निर्देशन प्राप्त हो सकें। जिससे बालिकाएं तनाव मुक्त होगी तथा भली प्रकार समायोजन कर पाएगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *शैफर, एल0 एफ0 (1961). साइकोलॉजी ऑफ एडजस्टमेंट वोस्टन हॉगटन को. न्यू यार्क, पृ0सं0 54.*
2. *ड्रेवर, जेम्स (1968). ए डिक्शनरी ऑफ साइकोलॉजी (पेंगुइन रेफरेंस बुक्स).*
3. *स्ट्रेन्ज, कार्ल मेनिंगर, मैसलों, मिटिलमैंन, बिग, हारविज, स्कीड एवं ए0वी0साह (उद्धरित) सिंह, अरूण कुमार (2010). आधुनिक असामान्य मनोविज्ञान, छठा संशोधित संस्करण, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली. पृ0सं0 597. 611, ISBN: 978-81-208-2223-8.*
4. *गेटस, जर्सिल्ट, एवं अन्य (1950). एजुकेशनल साइकोलॉजी, पृ0सं0 614–615.*
5. *स्मिथ, टिमोथी, डब्लू0 एंव अन्य (1983). सोशियल एंग्जायटी अन्सियस सेल्फ प्रीऑक्यूपेशन एंड रीकॉल ऑफ सेल्फ रिलेवेंट इंफॉर्मेशन, जर्नल ऑफ पर्सनैलिटी एंड सोशल साइकोलॉजी. वी0–44, पृ0सं0 1276.*
6. *हेडफील्ड, स्ट्रेन्ज, जहोदा, स्कॉट (उद्धरित) सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, उपाध्याय, कुमार जितेन्द्र एंव सिंह, राजेन्द्र (2014). विकासात्मक मनोविज्ञान. मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ0सं0 499, 520–533, ISBN978-81-208-3433-0.*
7. *वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन (2005). प्रमोटिंग मेंटल हेल्थ : कॉन्सेप्ट्स, इमर्जिंग एविडेंस, प्रैक्टिसः ए रिपोर्ट ऑफ द वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन, डिपार्टमेंट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड सब्सटेंस अब्युज इन कोलोबोरेशन विद द विक्टोरियन हेल्थ प्रमोशन फांउडेशन एंड द यूनिवर्सिटी ऑफ मेलबर्न. वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गेनाइजेशन, जनेवा.*
8. *राजश्री (2013). महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य, जीवन संतुष्टि एवं समायोजन पर जीवन मूल्यों के प्रभाव का अध्ययन. अप्रकाशित शोध–प्रबन्ध दयालबाग एजुकेशन इंस्टीट्यूट (डीम्ड यनिवर्सिटी) आगरा.*
9. *माली, राजकुमार (2002). सम्पन्न एवं विपन्न वर्ग के किशोर विद्यार्थियों की समायोजन क्षमता, आत्म सम्प्रत्यय एवं विद्यालयी निष्पत्ति का तुलनात्मक अध्ययन. रिसर्च प्रोजेक्ट डीम्ड यूनिवर्सिटी, सरदारशहर.*
10. *गारिया, डी0 बी0 (2012) "इफेक्ट ऑफ पेरेंट्स बिहेवियर आन द एडजस्टमेंट स्टेटस ऑफ स्टूडेण्ट्स "जरनल ऑफ द एजुकेशनल एण्ड साइक्लोजी रिसर्च, 2(2) 41–43*
11. *गनी, एम. वाई. और मीर, एम. ए. (2013), ''कम्पैरेटिव स्टडी ऑफ एडजस्टमेंट एण्ड एकेडेमिक अचीवमेंट ऑफ कॉलेज स्टूडेंट्स', रिसर्च आर्टिकल, जर्नल ऑफ एज्यूकेशनल रिसर्च एंड एस्से, जनवरी 2013, वॉल्यूम 1(1), पृ. 5–8,*
12. *यी, पिंग, हुवा, योग, जियान पिंग एंव नुओफेंग (2010), रिलेशनशिप विटविन सोशल सपोर्ट एंड सब्जेक्टिव वेलविइंग ऑफ सिटी टीचर्स, चाइनीज जनरल ऑफ क्लिनिकल साइकोलॉजी*
13. *कॉन्स, इ0, एस्टेवेज़, इ0, लियोन–मोरेनो, सी0, और मुसिटु, जी0 (2020).* लोनलीनेस, फैमिली कम्युनिकेशन, एड़ स्कूल एडजस्टमेंट इन ए सैंपल ऑफ साइबर विक्टिमाइज्ड एडोलिसेंट्स *International journal of environmental research and public health*, *17*(1), 335.
14. **शाम्भवी (2019)** कामकाजी एवं घरेलु महिलाओं के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन, *Ideal research review*, *64 (1)*, *92-96*